APPENDIX-IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Name of Scholar (In English) Meena Kumawat

(In Hindi) मीना कुमावत

2. Title of the Research Work :

(In English) Child Psychology in the novels of Dr. Hari Krishana Devsare.

(In Hindi) डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान।

3. Location

a. Institution/Department where the work is to be done -

Department of Hindi Govt. P.G. College Tonk (Raj.)

b. Geographical area of Investigation, if any. - No

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor
Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. ...मीना कुमावत..... on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have .....NIL..... (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is .....01..... (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

15/4/13

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. ...मीना कुमावत..... for research work if he/she is registered for Ph.D.

15/4/13
प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज.)

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

15/4/13

Signature of the Head, Department with date

Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचयात्मक महत्त्व एवं उद्धेश्य :–

साहित्य सृष्टा अपने समय के समाज का प्रतिनिधि होता है, इसलिए उसकी कृति में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का प्रतिबिम्बित होना नैसर्गिक होता है। हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यास साहित्य में तत्कालीन युग के बालमन की सुलभ चित्रित आकांक्षा, अपेक्षा, आशा, निराशा, उत्सुकता, जिज्ञासा, स्वप्न, जागरण, स्नेह, क्रोध, मिथ, ईर्ष्या श्रम आदि प्रस्तुत करने वाली महागाथा चित्रित है।

साहित्यकार बाह्य जगत् के तथ्यपरक बिन्दुओं के साथ ही अपनी आन्तरिक वैयक्तिकता को मनोवैज्ञानिक धरातल पर सम्पृक्त करता हुआ नवीन भाषाबोध एवं यथार्थ तत्त्वों से युक्त साहित्य की सृष्टि करता है। हरिकृष्ण देवसरे ऐसे ही साहित्यकार है जिन्होनें तत्कालीन समय में हाशियें पर रखे हुए बाल मन की सहज प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में स्व–साहित्य में यथार्थ को विकसित किया और उसे मुख्य धारा का संवाहक बनाया। हरि कृष्ण देवसरे के उपन्यास साहित्य में भाव और बौद्धिकता का अद्भुत सामंजस्य है। युग सत्य के सन्दर्भ में वैज्ञानिक सत्यानुभूतियों की सामाजिक अभिव्यक्ति युक्त मनोदशाओं का अंकन भी आपने उपन्यास साहित्य में किया है।इन्हीं विचारों के अनुरूप प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोवैज्ञानिक धरातल पर समझने का प्रयास है।

भारतीय उपन्यास साहित्य चिंतन धारा में हरिकृष्ण देवसरे का निश्चित मौलिक योगदान है। आलोचक प्रकाश मनु का मानना है कि " आप विशुद्ध रूप से बालकों के लिए लिए लिखने वाले साहित्य जगत् के सशक्त हस्ताक्षर है"। विगत् सदी के पूर्व तक हिन्दी में बाल साहित्य कोई स्पष्ट विधा नहीं थी। सूर, कबीर, रहीम एवं तुलसी जैसे प्राचीन कवियों को आज भी बाल साहित्यकार नहीं माना जाता है। किन्तु सूर एवं तुलसी के वे पद जिनमें कृष्ण और राम की बाल लीलाओं के वर्णन हैं जैसे :–

"मैया मैं तो चंद खिलौना लै हौं।"
जैहौं लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहौं।।
सुरभी कौ पाय पान न करिहौं बेनी सिर न गुहैहों।
ह्वैहौं पूत नंद बाबा कौ, तेरौ सुत न कहै हौं।।" (सूर)

" बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा।
अति आनंद दासन्ह कहँ दीन्हा।।
कछुक काल बीतें सब भाई।
बड़े भए परिजन सुखदाई।। " (तुलसी)

तथा कबीर और रहीम की अपेक्षाकृत सरल भाषा में लिखे नीति सम्बन्धी कुछ दोहों को बाल साहित्य के रूप में रेखांकित किया जाता रहा है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रूसो, मॉन्टेसरी पेस्टालॉजी जैसे कुछ विदेशी विचारकों ने पहली बार बच्चों के बारे में गम्भीरता से सोचा एवं बताया कि बच्चों की कुछ अपनी एक पहचान है। पाश्चात्य विचारकों का यह प्रभाव भारत पर भी पड़ा और सन् 1917 में बाल सखा पत्रिका के प्रकाशन से बाल साहित्य लेखन की शुरूआत हुई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बालसखा पत्रिका के लिए अंग्रेली बाल कविताओं जैसी रचनाएँ हिन्दी में लिखी तथा अन्य प्रतिष्ठित कवियों को हिन्दी में बाल कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया।

गद्य में मुंशी प्रेमचन्द ने परम्परागत किस्से–कहानियों से अलग बच्चों के लिए कथा साहित्य में मौलिकता के साथ प्रवेश किया और हिन्दी बाल कथाओं को (ईदगाह, पंच–परमेश्वर, बडे भाई साहब) एक नई पहचान और नई दिशा प्रदान की।

आज का हिन्दी बाल साहित्य (कहानी, नाटक, कविता और उपन्यास) विषय और शैलीगत विविधताओं में अत्यन्त समृद्ध है और इसने निश्चित ही बच्चों के साथ एक निकटता स्थापित की है। हिन्दी में चर्चित बाल साहित्यकारों को दो धाराओं में देखा जा सकता हैं, एक तो वे साहित्यकार जिन्होंने विशुद्ध रूप से केवल बच्चों के लिए लिखा है जैसे :– हरि कृष्ण देवसरे, जयप्रकाश भारती व्यथित हृदय राधेश्याम प्रगल्भ, राष्ट्र बंधु आदि। एवं दूसरी धारा में विष्णु प्रभाकर, भीष्म साहनी, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, राजेन्द्र अवस्थी, उपेन्द्रनाथ अश्क, सूर्य बाला आदि का नाम लिया जा सकता है। इन्होंने बड़ों के साथ बच्चों के लिए भी सशक्त रचनाएँ की है।

साहित्कार सुरेन्द्र वर्मा ने (आजकल नवम्बर 2008) कहा है "बाल साहित्य के विशेषज्ञ रचनाकार हरिकृष्णदेवसरे है।" वैसे उन्होंने बालकों के लिए सतत् लिखा है और अच्छा लिखा है। वैज्ञानिक विषयों को लेकर भी लिखा है, लेकिन बाल जिज्ञासा, कौतूहल और कल्पना का जो तिलिस्मी चुंबक उन्होंने आज के यथार्थ के साथ तकनीकी दुनिया के तथ्यों को लेकर ईजाद किया है, वह अद्वितीय है। पूरी जिम्मेदारी से कहा जा सकता है कि बचकाना नहीं बल्कि बाल साहित्य का अप्रतिम लेखन है। अतः ऐसे महान बाल साहित्य महारथी "हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान" निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण शोध विषय है।

हरिकृष्ण देवसरे के बाल उपन्यासों में काल्पनिकता कम तथा यथार्थ का पुट अधिक पाकर बालक नवजीवन प्राप्त करता है। देवसरे एक ऐसे सशक्त बाल उपन्यासकार हैं, जिन्होंने उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान को पूरी यथार्थता के साथ उकेरा है। आज बाल उपन्यासों में मनोविज्ञान विश्लेषण की आवश्यकता है तथा बालकों के मन को प्रभावित करने वाले तत्त्वों के मनोविश्लेषण की भी उपादेयता है। वर्तमान में जिस स्थिति में बालकों को पाते हैं, उसे देखकर साहित्य में बाल उपन्यासों पर शोध की अधिक आवश्यकता है। 21 वीं सदी के बालकों पर वातावरण का प्रभाव इतना अधिक बढ़ चुका है कि वे हमारी सभ्यता व संस्कृति भी भूलने लगे हैं।

डॉ. देवसरे के बाल उपन्यास – बाल साहित्य : मेरा चिंतन, www.घना. जंगल. कॉम, उडन तश्तरियाँ, डॉक्टरबोमा की डायरी, एक और भूत, आल्हा उदल, चुटकुलानगर, होटल का रहस्य, मंदिर में चोरी, बहादुर भालू, हाइजैकिंग, सुरखाव के पर, पाषाणपुर की राजकुमारी, महावीर छत्रसाल, आओ चंदा के देश चलें, होटल रहस्य, सोहराब रूस्तम, जालीनोट, जाली चेक, हांगकांग की गुड़िया, चंदा मामा दूर के, मंगलग्रह पर राजू, ला–वेनी, स्वान–यात्रा, चंदू के कारनामे और अंतरिक्ष के रहस्य आदि।

इन सब उपन्यासों में डॉ. देवसरे ने बालक के मन–मस्तिष्क में उभरने वाली जिज्ञासा, कौतूहल, पिपासा, आश्चर्य, विस्मय, प्रश्न पहेली आदि का वैज्ञानिक एवं तार्किकता के आधार पर सरल सुबोध भाषा में जवाब देने का प्रयास किया है। विज्ञान को कथा साहित्य के रंग में रंगा है और कथा साहित्य को फैंटेसी में रचने का प्रयास किया है। डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यास की बुनघट इतनी मनमोहक होती है कि बालमन इसके सम्मोहन से दूर नहीं हो पाते । मन की गुत्थियों के सशक्त चित्रकार डॉ. देवसरे शोधार्थियों की नजर से दूर रहे हैं। हिन्दी में आज साहित्यिक अनुसंधान की अनेक दिशाएँ संचरित हो रही है, साहित्य शोध प्रक्रिया के विविध स्त्रोतों में आज बाल मनोवैज्ञानिक अध्ययन की अत्यन्त अपेक्षा है।

मेरा विश्वास है कि "हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान" आयामों के अन्वेषण का मेरा यह प्रयास देवसरे वाङ्मय की एक नई दिशा का उद्घाटन करेगा। इस प्रकार उपन्यास साहित्य में बालमनोविज्ञान के सन्दर्भ में सभी आयामों को ध्यान में रखकर इस विषय पर शोध की आवश्यकता महसूस होती है। मनोविज्ञान से बालक की क्रिया प्रतिक्रिया का अध्ययन किया जाता है। बालक की सकारात्मक व नकारात्मक क्रियाओं को व्यापकता देते हुए इस शोध प्रबन्ध को रूपरेखा प्रदान की गई है। प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं –

- साहित्य एवं मनोविज्ञान के अन्तर्सम्बन्ध को अवगत करना।
- हिन्दी उपन्यास साहित्य में बाल मनोविज्ञान की महत्ती भूमिका को स्पष्ट करना।
- बाल नायक के मनोविज्ञान को उसके द्वारा ही रचित परिस्थितियों में समझना।
- रचनात्मक, सृजनात्मक और समीक्षात्मक दृष्टि से बालमन को समझना।
- वर्तमान के बदलते समाज और सांस्कृतिक परिवेश के साथ बाल साहित्य के नए और अधुनातन मानदण्डों का स्पष्टीकरण।
- समकालीन सन्दर्भों में बाल मन की क्रिया–प्रतिक्रिया का स्वरूप निर्धारित करना।
- बालकों की समस्याओं का प्रस्तुतीकरण एवं समाधान खोजना।

- कल्पना और यथार्थ के मध्य बालकों को सतही धरातल उपलब्ध करवाकर उनके मन में छिपी अपार शक्ति और सम्भावनाओं को उजागर करके समाज में एक सशक्त मानव के रूप में उसका विकास करना।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे की यही मौलिकता उनके उपन्यासों को सबसे अलग सिद्ध करती है, इसीलिए बालकों के प्रति समाज में वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील सोच को रेखांकित करना शोध का अभीष्ट उद्देश्य रहा है।

Review (Work Already Done on The Subject of Proposed Research Study)

शोध से संबद्ध साहित्य का सिहांवलोकन

'बाल मनोविज्ञान अर्थात् बालक के मन का विज्ञान–बालमनोविज्ञान पर समय–समय पर कई शोध किये गये हैं तथा कई कहानियाँ, नाटक, एकांकी व उपन्यास लिखे गये हैं। लेकिन अधिकांश शोध कार्य की विभिन्न ईकाइयाँ मनोविज्ञान की परिभाषा, सम्प्रदाय, प्रवृतियाँ, रूचियाँ, बाल – अपराध, किशोर मानसिकता, पारिवारिक संबंध, आर्थिक व राजनीतिक प्रभाव आदि को ही अपने अध्ययनका विषय बनाया है।

वर्तमान समय में बालकों के मन पर आधुनिक उपकरणों, वैज्ञानिक सोच, मीडिया, टी.वी., कम्प्यूटर आदि का प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान परिदृश्य में "डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान विषय पर शोध अध्ययन के चयन के दौरान निम्नलिखित साहित्य ने अपनी सीमाओं के साथ शोधार्थी का ध्यान आकर्षित किया हैं।

कनल एस.पी. (1963) " बालक का भाव विकास" :– इस पुस्तक में लेखक ने बालक के जीवन को उच्च स्तर तक विकसित करना, माता–पिता के उत्तरदायित्व, बालकों के भविष्य के सोच, बालक को बुराइयों और दुःखों से दूर रखना आदि भावों को प्रस्तुत किया गया है।

इस पुस्तक की अपनी सीमाएं है फिर भी यह पुस्तक शोध अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगी।

एन. ए. अग्रवाल रामनारायण (1966) "बाल अध्ययन का महत्त्व :– लेखक ने इस पुस्तक में बाल मनोविज्ञान, उसका व्यक्तित्व बालक की अवस्था, हाव–भाव, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक स्थिति का प्रभाव, आदतें, प्रवृत्तियाँ, रूचियों का अध्ययन आदि प्रस्तुत किया है अतः यह पुस्तक अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. देवसरे हरिकृष्ण (1969) :– "हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन" :– इस पुस्तक में लेखक ने बाल मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान का बाल उपन्यास से संबंध, वातावरण का प्रभाव प्रवृत्तियाँ, रूचियाँ, यथार्थ से संबंध, फैंटेंसी आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। शोध अध्ययन में प्रस्तुत पुस्तक उपयोगी व सार्थक सिद्ध होगी।

डॉ. मानधाने धनराज (1971) " हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास" :– इस पुस्तक में हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का विवरण है। हिन्दी उपन्यासों का विवरण है। हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, मनोविज्ञान की परिभाषा, मनोवैज्ञानिक अध्ययन आदि का अध्ययन है। शोध अध्ययन में इस पुस्तक का महत्त्व उपयोगी रहेगा।

डॉ. सहात्रबुद्धे विमल (1974) " हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :– इस पुस्तक में प्रारम्भिक पृष्ठभूमि में बालक का स्थान, उसका मनोविज्ञान विकास और पारिवारिक स्थिति का वर्णन है। शोध कार्य में यह पुस्तक उपयोगी व सार्थक सिद्ध होगी।

डॉ. माली शिवराज (1976) "स्वच्छन्दतावादी नाटक और मनोविज्ञान :–
इस पुस्तक में मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान व मनोविज्ञान की परिभाषा, बालक के मनोभाव, पर्यावरण और बाल मनोविज्ञान के अनुभव को प्रस्तुत किया गया है। इस

प्रस्तुत के विश्लेषण को इसके अनुभव के आधार पर प्रस्तुत शोध में सम्मिलित किया जायेगा।

श्रीमती सोलंकी रिद्धि (1982) "हिन्दी के साठोत्तर मनोविज्ञान उपन्यासों का स्वरूप विश्लेषण :– (राज. वि. वि. जयपुर) :– यह शोध ग्रंथ अप्रकाशित है। इस शोध अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है कि 1960 के बाद के उपन्यासों में वैज्ञानिक उपन्यासों का स्वरूप बदल गया है। स्वतन्त्रता से पूर्व जो उपन्यास लिखे गये, उनमें प्रायः किसानों की स्थिति, पूँजीपति वर्ग का आधिपत्य, नारी – विमर्श तथा पशु–पक्षियों पर ही जोर दिया गया और बालक को उपेक्षित रखा गया। बीच–बीच में ही बाल–मन पर प्रकाश डाला गया है। नारी सदैव ही उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु रही है लेकिन बालक को उपेक्षित ही रखा गया।

अतः प्रस्तुत शोध में बाल–मनोविज्ञान, स्वरूप विश्लेषण, महत्त्व, बाल रूचियाँ, प्रवृत्तियाँ तथा उसके यथार्थ सोच का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

डॉ. पाण्डेय रामजी (1903) " महादेवी की प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ :– इस पुस्तक में महादेवी के बाल पात्रों के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक शोध अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. श्रीमती अग्रवाल कमलेश (1983) " हिन्दी के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास" :– इस पुस्तक में हिन्दी के प्रमुख लेखकों के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। मनोविज्ञान की सार्थक विशेषताओं का ध्यान रखते हुए यह पुस्तक शोध अध्ययन में सहायक सिद्ध होगी।

परन्तु इस पुस्तक की सीमाएं हैं। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यासों का महत्त्व, स्वरूप, विश्लषण, बालक के मन की रूचियाँ, जिज्ञासा, कौतूहल, उत्कंठा आदि को प्रस्तुत किया जा रहा है।

भार्गव आशा (1986) "हिन्दी उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान (राजकीय डूँगर महाविद्यालय बीकानेर राज.) :– प्रस्तुत शोध ग्रन्थ अप्रकाशित है। इस शोध अध्ययन में बाल मनोविज्ञान की परिभाषा, व्यक्तित्व विकास, रूचियाँ, अभिवृत्तियाँ, समस्या – समाधान आदि का विवरण है। प्राचीन समय अर्थात् स्वतंत्रता पूर्व के बाल मनोविज्ञान तथा आज के बाल–मनोविज्ञान में बहुत अंतर आ गया है। बच्चों के मानसिक स्तर में वृद्धि हुई है। इस शोध की अपनी सीमाएं हैं। बाल–मनोविज्ञान की दृष्टि से यह ग्रन्थ सीमित है। परन्तु यह शोध ग्रन्थ शोध अध्ययन में उपयोगी व सार्थक सिद्ध होगा।

राठी गोपी कृष्ण (1987) " साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में युवा आक्रोश (राज.वि. वि.जयपुर) :– यह शोध ग्रन्थ अप्रकाशित है। इस अध्ययन में युवा वर्ग की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। युवा अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होने पर किस प्रकार विसंगति, गलत आदतों, आपराधिक प्रवृत्तियों में सम्मिलित हो जाते हैं। इसका विस्तृत विवेचन किया है। अतः यह शोध अध्ययन में सहायक सिद्ध होगा।

प्रकाश प्रभा बिजली (1991) "जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल" :– इस पुस्तक में जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान का वर्णन है। मनोविज्ञान का आंशिक अर्थ व सम्पूर्ण व्यक्तिगत परिभाषाओं के आधार पर यह पुस्तक बाल मनोविज्ञान को समझने में सहायता प्रदान करेगी।

प्रस्तुत शोध अध्ययन बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण है जिसके अन्तर्गत बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन किया जायेगा।

श्रीमती शालिनी (1992) ''स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में किशोर मानसिकता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'' (राज. वि. वि. जयपुर) :– यह शोध ग्रन्थ अप्रकाशित है इस अध्ययन में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का उद्‌भव और विकास, प्रारम्भिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास, बालावस्था की प्रारम्भिक स्थिति, मूल प्रवृत्तियाँ, रूचियाँ, इच्छाएँ, जिज्ञासा व कुण्ठा आदि तथा किशोर मानसिकता का अध्ययन किया गया है । परन्तु इस शोध अध्ययन की अपनी सीमाएं हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में बालक की मुख्य पृष्ठभूमि से लेकर चरमावस्था तक का विश्लेषण किया जायेगा। अतः यह शोध अध्ययन में सहायक सिद्ध होगा।

मीणा खुशीराम (1998) ''साठोत्तर 'हिन्दी' उपन्यासों के पात्रों की आपराधिक प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'' (राज.वि.वि.जयपुर) :– यह शोध ग्रन्थ अप्रकाशित है। इस अध्ययन को पाँच अध्यायों में बाँटा गया है। इन अध्यायों में प्राचीन व नवीन बाल उपन्यासों का परिचय, वर्गीकरण, भाषा–शैली के आधार पर विभिन्न भाषा–शैली, बाल अपराध की प्रवृत्ति, बाल मनोविज्ञान की परिभाषा समस्या तथा समाधान व सारांश प्रस्तुत किया है। शोध अध्ययन की दृष्टि से यह शोध ग्रन्थ उपयोगी व सार्थक सिद्ध होगा।

पाण्डेय गोपाल जी (1999) ''हिन्दी उपन्यासों में मनोभावों का स्वरूप :– इस पुस्तक में हिन्दी उपन्यास के पात्रों के मनोभावों का स्वरूप तथा बाल मन की विभिन्न रूचियों, प्रवृत्तियों, इच्छाओं व कौतूहल, जिज्ञासा का चित्रण है। बालक अपने कल्पना लोक में खोया रहता है। कल्पना के माध्यम से यथार्थ सामने आता है। मनोविज्ञान को समझने व बालमनोविज्ञान से उसके संबंध तथा वास्तविक मनोविज्ञान को समझने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

पंत मधु (आजकल नव. 1999) "बच्चों के व्यक्तित्व का विकास का विकास पृष्ठ सं. 42 :– प्रस्तुत लेख में बालक के मनोविज्ञान की विशेषताओं को प्रकाशित किया गया है। बालक का व्यक्तित्व किस प्रकार विकसित होता है उसके व्यक्तित्व विकास पर किन–किन तत्त्वों का प्रभाव पड़ता है तथा व्यक्तित्व में क्या–क्या बाधाएँ आती है ? इन सब पर यह लेख प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तावित शोध अध्ययन में इस लेख की उपयोगिता सहायक होगी।

कुमार देवेन्द्र (आजकल नव. 1999) "भटकाव और नई दिशा पृष्ठ सं. 36,37,38, :– इस लेख में वर्तमान में बच्चों के लिए लिखने वाले लेखकों का व्यक्तित्व दर्शाया गया है। आज के लेखक बच्चों के लिए जो सामग्री पेश करते हैं उनकी कमियों को बताकर बाल साहित्य लेखन की समस्याओं को वर्णित किया गया है। इस लेख के माध्यम से बच्चों के लिए लेखन संबंधित समस्याओं को समझने में सहायता मिलेगी।

मणि दिनेश (आजकल नव. 2001) "बाल विज्ञान साहित्य : उद्देश्य एवं स्वरूप पृष्ठ सं. 15–16 :– प्रस्तुत लेख में बच्चों के द्वारा विज्ञान की जानकारी प्राप्त करना तथा उसके उपयोग, प्रयोग संबंधित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। आज विज्ञान की तरक्की को देखते हुए हर बालक के लिए यह जिज्ञासा का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। बच्चों को विज्ञान के बारे में सही जानकारी देकर उनके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित किया जा सकता है। प्रस्तुत लेख शोध अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा।

पाण्डेय शीतांशु भूषण शशि (2001) "मनोवैज्ञानिक और मिथकीय आलोचना" :– इस पुस्तक में मनोविज्ञान की परिभाषा बाल मनोविज्ञान की परिभाषा, मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, शाखाएँ, मनोविज्ञान का क्षेत्र उसकी सीमाएं आदि है। बालक की आन्तरिक शक्ति को समझने में मनोविज्ञान सहायक होता है। आज हर क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक,

राजनीतिक व साहित्य सभी में मनोविज्ञान को ढूँढा जा सकता है। इस पुस्तक की सीमाओं के बावजूद यह पुस्तक शोध अध्ययन में सार्थक सिद्ध होगी।

कुमार देवेन्द्र (आजकल नव. 2003) "बाल साहित्य और बाल विकास पृष्ठ सं. 4–5–8" :– यह लेख चार भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में बालक के जीवन मूल्यों, आदर्शों, नैतिकता से संबंधित विचार, द्वितीय भाग में साहित्य में बाल–पात्रों का स्थान, तृतीय में बाल साहित्य का स्वरूप–विश्लेषण एवं चतुर्थ भाग में बालकों की सामाजिक पृष्ठभूमि आदि का वर्णन है। यह लेख इस शोध अध्ययन में उपयोगी साबित होगा।

बनयसिंह (2002) "राजस्थान का स्वातन्त्रयोत्तर बाल साहित्य : एक अनुशीलन (मनोहर प्रभाकर के विशिष्ट सन्दर्भ में)" :– यह शोध ग्रन्थ अप्रकाशित है। इस शोध ग्रन्थ को आठ अध्यायों में वर्गीकृत किया गया हैं प्रथम– बाल साहित्य की भूमिका, द्वितीय राजस्थान का बाल साहित्य, तृतीय–राजस्थान के बाल रचनाकार, चतुर्थ–मनोहर प्रभाकर का बाल साहित्य, पंचम– बाल साहित्य की विधाओं का वर्णन, षष्द्म – कलात्मक सौन्दर्य, सप्तम – पत्रकारिता का बाल साहित्य में योगदान तथा अष्ट्म बाल समस्याओं और उनका समाधान का वर्णन है। फिर भी इस शोध ग्रंथ की अपनी सीमाएं हैं। इस शोध ग्रन्थ का विश्लेषण कर इसके महत्त्व को प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत किया जायेगा।

सुनिता (आजकल नव. 2003) "बाल साहित्य का ताजा परिदृश्य" पृष्ठ संख्या 37–41 :– प्रस्तुत लेख में वर्तमान लेखकों द्वारा लिखित बाल साहित्य को दर्शाया गया है। आज बच्चों को जो साहित्य पढ़ने के लिए दिये जाते हैं उनमें कोरा उपदेश, शिक्षा, नैतिकता का पाठ व बड़ों की आज्ञा–पालन आदि बातें ही ठूँस–ठूँसकर भर दी जाती है। उन्हे जो सामग्री चाहिए वह उपलब्ध नही हो पाती इससे उनकी मानसिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। इसी परिदृश्य को लेकर यह लेख लिखा गया है। शोध अध्ययन की दृष्टि से यह लेख सार्थक सिद्ध होगा।

मनु प्रकाश (आजकल नव. 2004) "बच्चों के दिल की बात करते हैं बाल उपन्यास" पृष्ठ सं. 7–12 :– प्रस्तुत लेख बाल उपन्यासों पर प्रकाश डालता है। पहले बच्चे कहानी, कथा, किस्से, पहेलियाँ, नाटक आदि को पढ़कर संतोष प्राप्त कर लेते थे लेकिन वर्तमान में बच्चे एक लम्बे उपन्यास को पढ़ सकते हैं। उनकी सोच इतनी विस्तृत हो चुकी है कि वे छोटी–छोटी बातों में भी गहरा अर्थ निकाल सकते हैं। विषय की व्यापकता की दृष्टि से यह लेख कारगर सिद्ध होगा।

डॉ. श्री प्रसाद (2007) "बाल साहित्य की रूपरेखा" :– इस पुस्तक में बाल साहित्य पर विशद चर्चा की गई है। बालकों के लिए लिखना कब से प्रारम्भ हुआ, इसका वर्णन है। पहले जो साहित्य था एवं आज जो बाल साहित्य हैं उसमें क्या अंतर आया है। इस पुस्तक में इन सब पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक की अपनी सीमाएं हैं। लेकिन यह पुस्तक बाल उपन्यासों के महत्त्व को देखते हुए सहायक सिद्ध होगी।

फ्रायड – मनोविश्लेषण (2008) इस पुस्तक में फ्रायड के मनोविज्ञान संबंधित विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इसको तीन भागों में बाँटा गया है। प्रथम भाग में गलतियों का मनोविज्ञान, दूसरा भाग स्वप्न तीसरा भाग स्नायुरोगों से संबंधित है। यह मनोविज्ञान की आधार भूत पुस्तक है, जो अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है।

विक्रम सुरेन्द्र (आजकल नव. 2008) "बाल उपन्यासों की रोचक दुनिया पृष्ठ सं. 44–47 :– इस लेख में बाल उपन्यासों के सृजन व उसके लिए प्रयास आदि का उल्लेख है। वर्तमान में उपन्यास का क्या स्वरूप होना चाहिए तथा उन्हें प्रदर्शित किस रूप में किया जाये, यही सब इसमें प्रदर्शित है। यह लेख इस शोध अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा।

कश्यप ओमप्रकाश (आजकल नव. 2009) "वैश्विक प्रभाव और हिन्दी बाल साहित्य पृष्ठ सं. 8–10 :– इस लेख में बदलते हुए परिवेश एवं औद्योगिक वैश्वीकरण ने बचपन को किस प्रकार प्रभावित किया है इसका उल्लेख है। आज हम जिस स्थिति से गुजर रहे हैं उसमें बालक को कैसा बचपन मिल रहा है, उसकी जिज्ञासाओं को कैसे कुंठित किया जा रहा है ? यह उल्लेखित है।

इस लेख के माध्यम से भी शोध अध्ययन को आगे बढ़ाने में सहायता ली जा सकती है।

शर्मा रवि (आजकल नव. 2009) " वर्तमान परिवेश और बच्चों पर दबाव पृष्ठ सं. 4–5 :– इस लेख में बढ़ती हुई अनुशासन हीनता तथा उसके दुष्प्रभावों को प्रदर्शित किया है। वर्तमान परिवेश में माता–पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है। चारों और बाजारवाद का बोलबाला है नैतिकता का पतन हो चुका है। यह सब बातें बालक को कैसे और क्यों प्रभावित कर रही है इसका हल प्रदान करती है । इस लेख का विश्लेषण कर शोध अध्ययन में इसके महत्त्व को प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत हम विभिन्न बिन्दूओं पर क़ार्य करने का प्रयास करेंगे।

Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation. (Based on the review)

अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कार्य की अनुपलब्धता

बाल उपन्यास और मनोविज्ञान पर समय – समय पर कई शोध कार्य किये गये हैं लेकिन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के बाल उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन पर अलग से कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अब तक जो शोध कार्य प्रस्तुत किये गये हैं, उनमें केवल प्रारम्भिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। बाल साहित्य में बाल उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण अध्ययन किया जा रहा है। बाल मन के विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान का कोई थाह नहीं है। बालक की सोच बड़ों से बिलकुल भिन्न होती है। उसके सोचने–समझने तथा बोलने का तरीका बिलकुल अलग होता है।

अब तक के शोध अध्ययन में मनोविज्ञान की परिभाषा, उसके सम्प्रदाय, मनोविज्ञान तथा बाल मनोविज्ञान का संबंध आदि पर अध्ययन किया गया है, लेकिन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जो कि एक सशक्त बाल उपन्यासकार हैं उन पर किसी का ध्यान नही गया है उन्होंने जो बाल उपन्यास रचे हैं वे कल्पना पर आश्रित न होकर यथार्थ पृष्ठ भूमि में रचित है। उनमें फैंटेंसी है लेकिन बालक का मन कितनी गहराइयों को छूता है। उसका विशद वर्णन है।

अब तक निम्नलिखित गहन अध्ययन समय–समय पर होते रहे हैं।

गौड़ शारदा (1983) "गत दो दशकों के हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक पीठिका :– इस अध्ययन में दो दशक के पूर्व के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का स्वरूप, भूमिका, भाषा शैली, उपन्यासों के पात्रों की विशेषताएं आदि पर बल दिया गया है। वर्तमान उपन्यासों को आधार बिन्दु बनाकर प्रस्तुत शोध अध्ययन का महत्त्व बताया जायेगा।

शर्मा डॉ. विजय कुमार (2008) "बाल मनोवैज्ञानिक प्रेमचन्द :– प्रस्तुत अध्ययन में विषय विश्लेषण, महत्त्व, बाल मनोविज्ञान की व्याख्या परिभाषा, सम्प्रदाय, प्रेमचन्द की जीवनी, बाल रूचि व विकास, बाल समस्या, बाल–अपराध आदि के केन्द्र में रखा गया है।

शर्मा रवि (2009) "वर्तमान परिवेश एवं बच्चों पर दबाव" पृष्ठ सं. 4–6 :– इस अध्ययन में आधुनिक परिवेश में पल रहे बच्चों पर बढ़ती अनुशासनहीनता, स्वार्थ, भ्रष्टाचार आदि का प्रभाव पड़ रहा है। इसी की व्याख्या को सम्प्रेषित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चमन अखिलेश श्रीवास्तव (आजकल नव. 2009) "गिरफ्त में बचपन" पृष्ठ संख्या 6 :– इस अध्ययन में परिवेश की वास्तविकता सूचनाक्रांति, माता–पिता की महत्त्वाकांक्षा व भौतिकता के बारे में बताया गया है। बालक के मनोविज्ञान को समझना सरल कार्य नहीं है। इसी विषय पर प्रकाश डाला गया है।

वर्तमान समय में बालक की सोच विकसित होने तथा वैश्वीकरण के युग में परिवर्तित परिस्थितियों को देखते हुए पूर्णतया अद्यतन शोध की महत्ती आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययनकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इस शोध में आधुनिक यथार्थ सोच का अध्ययन किया जायेगा, जिसके अन्तर्गत बालक को वर्तमान परिवेश की आवश्यकता के अनुसार उसकी जिज्ञासा को शांत करने की शिक्षा मिलती है।

7

Major Hypothesies, if any.

शोध परिकल्पना

मनोविज्ञान मन की विविध स्थितियों का विश्लेषण करने वाला मनुष्य के व्यवहार का विशिष्ट ज्ञान है। इस मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर मानव मन परिकल्पनाएँ करता है। बालमनोविज्ञान जो कि सम्पूर्ण मानव के व्यक्तित्व का आधार स्तम्भ है, उसे हाशिय पर रखा गया है। अतः उपन्यास साहित्य में बाल मनोविज्ञान के आधार पर साहित्यिक अनुसंधान के माध्यम से मानव की चेतन अनुभूतियों की व्यापक भूमिका को निर्दिष्ट करने की परिकल्पना है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी उपन्यास साहित्य की पृष्ठभूमि है, जिसमें हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा, कथनवस्तु, चयन, स्वरूप, प्रकार, प्रवृत्तियाँ और विश्लेषण है।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी उपन्यास साहित्य में बालमनोविज्ञान का स्वरूप, साहित्य और बाल मनोविज्ञान का अन्तः सम्बन्ध, अर्थ और परिभाषा, स्वरूप सिद्धान्त एवं शाखाओं पर प्रकाश डालते हुए बालमनोविज्ञान का हिन्दी उपन्यास साहित्य पर प्रभाव को प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय अध्याय में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे का जीवनवृत्त, शिक्षा–दीक्षा, सामाजिक व पारिवारिक स्थिति व रचनाधर्मिता केन्द्रित है। इस अध्याय में इनके जीवन–वृत्त पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा, प्रेरणास्त्रोत एवं व्यक्तित्व पर विचार किया गया है। उपन्यास साहित्य में इनकी बालमनोविज्ञान से सम्बन्धित कहानी, नाटक व अन्य विधाओं पर दृष्टिपात किया जायेगा। इनके साहित्य में सामाजिक चेतना, चरित्र निर्माण, संवाद कौशल और वातावरण अंकन तथाा सम्भावना व उपादेयता को दर्शाया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ. देवसरे की रचना शैली में फैंटेसी व यथार्थ के साथ उपन्यासों की प्रबन्धात्मकता, प्रस्तुत व अप्रस्तुत विधान, प्रतीक और मिथक को स्पष्ट करते हुए भाषायी चेतना की विवेचना की जायेगी।

पंचम अध्याय में बाल विकास में बालक की अभिरूचियाँ और प्रवृत्तियों को दर्शाते हुए उनकी समस्याओं व समाधानों को वर्णित किया गया है। साथ ही बाल उपन्यास और उनके समकालीन संदर्भ को विवेचित किया जायेगा।

उपसंहार – हिन्दी साहित्य में बाल मनोविज्ञान के प्रभाव का वर्णन है।

8

Research Methdology

शोध प्रविधि

प्रस्तावित कार्य वर्तमान काल के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के बाल उपन्यासों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है। शोध प्रविधि सर्वेक्षण तथा प्रायोगिक अध्ययन के माध्यम से विभिन्न समस्याओं के विश्लेषण करने की कला तथा विज्ञान है। प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन पर केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत डॉ. देवसरे के बाल उपन्यासों के साहित्यिक मूल्यों, सैद्धान्तिक मान्यताओं, वास्तविक आयामों एवं युगचेतना के संदर्भ में किये गये सांगोपांग विवेचन विश्लेषण को सम्मिलित किया है। शोधक की दृष्टि से रचना के ठोस एवं गुणात्मक तत्त्वों को उद्‌घाटित करना मेरा दायित्व रहेगा।

- शोध विषय हेतु मूल पुस्तकों को संकलित किया जायेगा।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हेतु विभिन्न प्राचीन ग्रंथालयों, व्यक्तिगत संग्रहालयों से सामग्री संकलित करनी होगी।
- पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रन्थों से सूचनाएँ प्राप्त करना।
- पत्र–पत्रिकाओं एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा चर्चा करना।
- अध्यायों के क्रम से तथा फिर विषय क्रम से कार्ड तैयार करना तथा टिप्पण पद्धति को काम में लेना।
- पत्राचार, साक्षात्कार विधि और प्रश्नावली विधि के अन्तर्गत अधोलिखित प्रश्नों को सम्मिलित किया जायेगा।

1. पेड़ हरे क्यों होते हैं?
2. आम में गुठली कैसे बनती है?
3. चन्द्रमा पर कौन दिखाई दे रहा हैं?
4. आँखें अँधेरे में कैसे काम करती है?
5. क्या आँधी तूफान भूत होते हैं?

6. हवाईजहाज सड़क के बिना कैसे चलते हैं?
7. क्या सूर्य के चारों ओर आग का समुद्र है?
8. रेलगाड़ी कैसे चलती है?
9. रंगों का निर्माण कैसे होता है?
10. हम श्वास कैसे व क्यों लेते हैं?
11. मछली पानी में ही क्यों रहती है?
12. अँधेरा क्यों होता है?
13. भूत कैसे होते हैं?
14. जादू क्या होता है?
15. बिल्ली की आँखें रात में क्यों चमकती है?
16. अचानक किसी भी आवाज को सुनकर डर क्यों लगने लग जाता है?
17. क्या जादू से रूपये व रसगुल्ले बनाए जा सकते हैं?
18. बिल्ली का कोई परिवार भी होता है या नहीं।
19. क्या रेलगाड़ी व फुटबॉल को जादू से रोका जा सकता है?
20. कुत्ते चोर को पकड़ने का कौनसा मंत्र जानते हैं?
21. उडनतश्तरी कहाँ से आती है?
22. उडनतश्तरियों से किस प्रकार का खतरा रहता है?
23. सजीव एवं निर्जीव क्या है?

- इन्टरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबासाइट्स का प्रयोग किया जायेगा।

उपर्युक्त शोध प्रविधि को मध्य नजर रखते हुए अधोलिखित विषयानुक्रमणिका प्रस्तुत है। –

प्रथम अध्याय –

- हिन्दी उपन्यास साहित्य एवं उसका इतिहास (हरिकृष्ण देवसरे)
- हिन्दी उपन्यास साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
- हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास यात्रा।
- हिन्दी उपन्यास साहित्य का कथावस्तु चयन।
- हिन्दी उपन्यास साहित्य का स्वरूप और विश्लेषण प्रकार व प्रवृत्तियाँ।

द्वितीय अध्याय –

- हिन्दी उपन्यास साहित्य में बाल मनोविज्ञान का स्वरूप।
- साहित्य और बाल मनोविज्ञान का अन्तर्सम्बन्ध।
- बाल मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप।
- साहित्य व बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्त एवं शाखाएँ।
- बाल मनोविज्ञान का हिन्दी उपन्यास साहित्य पर प्रभाव।

तृतीय अध्याय –

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के उपन्यासों में बाल–मनोविज्ञान

- जीवनवृत्त एवं कृतित्व।

- बाल विज्ञान के गुण व स्वरूप।
- चरित्र निर्धारण व बाल मनोविज्ञान।
- संवाद कौशल और बाल मनोविज्ञान।
- वातावरण अंकन एवं बाल मनोविज्ञान।
- संभावनाएँ एवं उपादेयता।

चतुर्थ अध्याय –

डॉ0 देवसरे की रचना शैली और बाल मनोविज्ञान

- फैंटेंसी और यथार्थ (स्वप्निल दुनिया का यथार्थ)।
- उपन्यासों की प्रबन्धात्मकता (आकार–विधान)।
- प्रस्तुत व अंप्रस्तुत बिम्ब–विधान।
- प्रतीक व मिथक।
- भाषायी चेतना।

पंचम अध्याय –

बाल विकास में बाल उपन्यासों की भूमिका :–

- बाल अभिरूचियाँ और प्रवृत्तियाँ।
- बाल समस्याएँ एवं समाधान।
- बाल उपन्यास और समकालीन सन्दर्भ।

उपसंहार – हिन्दी उपन्यास साहित्य में बाल मनोविज्ञान का प्रभाव व महत्त्व।

List of References Cited

संदर्भित पुस्तकों की सूची

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष	संस्करण
डॉ. हरिकृष्ण देवसरे	अंतरिक्ष के रहस्य	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	आओ चंदा के देश चले	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	आल्हा उदल	शकुन प्रकाशन, दिल्ली		
" "	उड़न तश्तरियाँ	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	एक और भूत	सम्पूर्ण बाल विकास कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	गद्दार	गौत्तम बुक कम्पनी राजापार्क,	2009	
" "	चंदा मामा दूर के	पराग पत्रिका, दिल्ली		
" "	चंदू के कारनामे	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	चुटकुला नगर	शकुन प्रकाशन, दिल्ली		
" "	जाली चैक	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	जाली नोट	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	
" "	डाकू का बेटा	शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली		
" "	डॉक्टर बोमा की डायरी	सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली,	2009	

पाषाणपुर की राजकुमारी – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " बहादुर भालू – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " बाल साहित्य : मेरा चिन्तन – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " मंगल ग्रह पर राजू –सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य

" " प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009

मंदिर में चोरी – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " महाबली छत्रसाल – उमेश प्रकाशन दिल्ली

" " ला–वेनी – सम्पूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, अमर सत्य

" " प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009

स्वान–यात्रा – अमर सत्य प्रकाशन, नई दिल्ली

" " सुरखाब के पर – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " सोहराब रूस्तम – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " हांगकांग की गुड़िया – मिलिंद (मासिक) सं. रत्न प्रकाशन शील

" " हाइ जैकिंग – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " होटल का रहस्य – अमर सत्य प्रकाशन, नई दिल्ली

" " होटल रहस्य – शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

" " www.घना जंगल. कॉम – नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया दिल्ली

03 मार्च 2006

2 सहायक ग्रन्थ

(अ) हिन्दी ग्रन्थ

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष/संस्करण
अग्रवाल रामनारायण –	बाल–मनोविज्ञान	कैलाश पुस्तक सदन गवालियर	1966
अग्रवाल सत्यप्रकाश –	एक डर पाँच निडर	पराग पत्रिका	
आचार्य द्विवेदी हजारी प्रसाद–	हिन्दी साहित्य	राजकमल प्रकाशन दिल्ली	
ओमप्रकाश –	चाँद से आगे	शकुन प्रकाशन नई दिल्ली	
क्रो एण्ड क्रो –	बाल–मनोविज्ञान एवं पारिवारिक सम्बन्ध		
कुमार देवेन्द्र –	अधूरा सिंहासन	आत्माराम सन्स	9 जनवरी 2008
कोहली द्रोणवीर –	करामाती कद्दू	साप्ताहिक हिन्दुस्तान	
खोलिया पानू –	प्रतिचोट	किरण आफ्सेट पब्लिशर्स भरतपुर	2008
गुप्त रामबाबू –	बाल–मनोविज्ञान	न्यू पब्लिशिंग हाउस कानपुर	1968
गोस्वामी अमर –	किस्सों का गुलदस्ता	चेतना प्रकाशन	जनवरी 2007
चौहान मनहर –	जादुई खड़िया	धर्मयुग पत्रिका	
चौहान सुभद्राकुमारी –	तीन बच्चे	किरण आफ्सेट पब्लिशर्स भरतपुर	2008
जैनेन्द्र –	आत्म शिक्षण	एक्सीलैण्ट पब्लिकेशन्स डी–37, इण्डस्ट्रियल एरिया साईट ए मथुरा	2007
जैनेन्द्र –	खेल	किरण आफ्सेट पब्लिशर्स भरतपुर	2008
जैनेन्द्र –	प्रेमचन्दः एक कृति व्यक्तित्व		
डॉ. उपाध्याय देवराज –	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान		
डॉ. कपिल एच. के –	असामान्य मनोविज्ञान	हरप्रसाद भार्गव, आगरा	1984, प्रथम
डॉ. चौबे सरयू प्रसाद–	बाल मनोविज्ञान		
डॉ. चौबे सरयू प्रसाद–	बाल व्यवहार विकास		
डॉ. जायसवाल सीताराम –	बाल मनोविज्ञान	आर्य बुक डिपो, दिल्ली	1992, तृतीय

डॉ. जायसवाल सीताराम – मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा, हिन्दी समिति सूचना विभाग उत्तरप्रदेश 1963 प्रथम

डॉ. देवराज – दर्शनशास्त्र का इतिहास

डॉ. पण्डित बालकृष्ण एस. – शिक्षा मनोविज्ञान अनंत हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली 1963, प्रथम

डॉ. पाण्डेय रामजी – महादेवी की प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ भारतीय ज्ञानपीठ बी/45–47 कनॉट प्लेस प्रथम

डॉ. बाउण्ड्र रामकुमार, प्रो. भटनागर सुरेश – शिक्षा मनोविज्ञान विवेक प्रकाशन मेरठ 1972, प्रथम

डॉ. माथुर एस.एस. – समाज मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1972, तृतीय

डॉ. माथुर एस.एस. – सामान्य मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1972, तृतीय

डॉ. राघव रांगेय – प्रगतिशील साहित्य के मानदंड(प्रथम) सरस्वती पुस्तक मंदिर आगरा 1954, प्रथम

डॉ. वर्मा प्रीति तथा – बालमनोविज्ञान एवं बालविकास विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
डॉ. श्रीवास्तव डी.एन.

डॉ. वात्स्यायन – समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा

डॉ. शर्मा रामनाथ – बाल मनोविज्ञान की रूपरेखा

डॉ. शर्मा रामनाथ – व्यावहारिक मनोविज्ञान की रूपरेखा

डॉ. श्रीवास्तव डी.एन., – आधुनिक समाज मनोविज्ञान हरप्रसाद भार्गव, आगरा 1982, पंचम
डॉ. पाण्डेय जगदीश, प्रो. सिंह लजीत

डॉ. शुक्ला ममता – मनुभंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन जवाहर पुस्तकालय, मथुरा प्रथम

डॉ. सिंह लाभ, डॉ. तिवारी गोविन्द – असामान्य मनोविज्ञान आगरा मनोविज्ञान शोध केन्द्र, आगरा

दिनेश देवराज – नागराज वासुकि पराग पत्रिका
देवसरे हरिकृष्ण – धुएँ की घाटी अमर सत्य प्रकाशन 1984
देसाई अनिता – बिल्ली हाउस बोट पर साहित्य अकादमी 23 जुलाई 2003
नागर अमृतलाल – अक्ल बड़ी या भैंस राजपाल सन्स 21 सितम्बर 2002
प्रगल्भ राधेश्याम – अभिमन्यु शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली
प्रगल्भ राधेश्याम – कानून मजबूर है शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली
प्रभाकर विष्णु –धरती अब भी घूम रही है किरण ऑफसेट पब्लिशर्स, भरतपुर 2008
प्रेमचन्द – कर्मभूमि हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 2001, प्रथम
प्रेमचन्द – प्रेमाश्रम हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 2001, प्रथम
पुरी उमेशकुमार– बाल मनोविज्ञान और हिन्दी उपन्यास उपलब्धि और संभावनाएँ टंकित शोध प्रबन्ध चौ. चरणसिंह वि.वि. मेरठ 1985
फील्ड ब्ल्यूम – भाषा मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 1968, प्रथम
अनु. डॉ. विश्व प्रसाद
बॉन्ड रस्किन– ए फ्लाइट ऑफ पिजन्स पेंग्विन बुक्स इंडिया दिसम्बर, 2008
यादव उषा – नाचे फिर जंगल में मोर रचनाकार 1586/1 ई. नवीन शाहदरा, दिल्ली, 2006
राजपाल – फ्रायड मनोविशलेषण राजपाल सन्स नई दिल्ली 2008
वर्मा अभिलाष – गोल्डी सिल्विया के कारनामे राधाकृष्ण प्रकाशन 13 अप्रेल 2000
वर्मा शकुन्तला– पाँच जासूस सी.बी.टी. प्रकाशन 3 फरवरी 2006
विक्रम सुरेन्द्र – बाल साहित्य शोध समीक्षा संदर्भ राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर , अमीनाबाद लखनऊ
विक्रम सुरेन्द्र – समकालीन बाल साहित्य परख और पहचान कुसी प्रकाशन अमीनाबाद लखनऊ
शर्मा क्षमा – एक रात जंगल में नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया 6 जनवरी 2006

सक्सेना उदयवीर – बालमनोविज्ञान साहित्य प्रकाशन, आगरा 1985 प्रथम

सक्सेना के. पी. – खलीफा तरबूजी पराग पत्रिका

हॉल कैल्विन एस. – फ्रायड मनोविज्ञान प्रवेशिका राजकमल प्रकाशन नईदिल्ली

अनु.भट्ट बी.डी. 1963 प्रथम

हृदय व्यथित – गंगापुत्र शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली

हैवलॉक अनु. गुप्ता – यौन मनोविज्ञान

मन्मयनाथ

पत्र – पत्रिकाएँ

आजकल – प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

चंपक – परेश नाथ, विश्व विजय प्रा. लि. एम – 12 कनॉट सरकस

प्रतिनिधि बाल नाटक – संपादक डॉ. हरिकृष्ण देवसरे (1996) उ. प्र. हिन्दी संस्थान, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ

प्रभात – 6 अक्टूबर 1952

बच्चों के बारह उपन्यास – राधेश्याम प्रगल्भ (1976) शकुन प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

बच्चों की सौ कहानियाँ – संपादक डॉ. हरिकृष्ण देवसरे (1976) शकुन प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

बच्चों के सौ नाटक – संपादक डॉ. हरिकृष्ण देवसरे (1976) शकुन प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

बालक – एंड पब्लिशर्स लि. भास्कर प्रिंटिंग प्रेस 10–11

बाल दिवस त्योहार हमारा– संपादक रवीन्द्र कुमार 'राजेश' (1996) जनवाणी प्रकाशन, विश्वासनगर शाहदरा दिल्ली

बाल भास्कर – रमेश चन्द्र अग्रवाल, मालिक मेमर्स राइटर्स

बाल मनोविज्ञान – लालजीराम शुक्ल (सं. 2017) नागरी प्रचारिणी सभाकाशी

बाल साहित्यः रचना और समीक्षा – संपादक डॉ. हरिकृष्ण देवसरे (1996) शकुन प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली

माध्यम – मार्च 1966

सर्वोत्तम – झिलमिल इण्डस्ट्रीज एरिया दिल्ली – 95

साप्ताहिक हिन्दुस्तान – 2 मार्च 1963 हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस नई दिल्ली

अंग्रेजी ग्रन्थ

Writer	Book	Publisher	Pub. Year	Edition
Alis Iliait -	Social			
Beking -	Psychology			
Crow L.C. & Crow A. -	Child Psychology	Newyork		
Dr. Sathana-	Society & The Criminal			
Drever James-	A Dictionary of Psychology			
Eysenek H.J. -	Enchclopedia of Psychology			
Hurlock E.B.-	Child Development	Tokyo Kagakusha mc grow Hill	1956	
Jerslla T. -	Author			
Kiskar -	The he Organised Personality			
Landis & Landis -	Social Living			
Mecduggal W. -	An outline of Psychology	Scriglruchhers New York	1961	
Micdoucll -	Charecter and the Conduct of life			
Musseh.P.H. Conger.J.J.Mussen J. Kagan and Horper conger -	Child development & Personality		1956	
Stone L.J. & Churcha J. -	Childhood			

कोश

लेखक / संपादक		कोश	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष / संस्करण
अमरनाथ	–	अमरकोश	मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा.लि. दिल्ली	
आप्टे वामन शिवराम	–	संस्कृत हिन्दी कोश	मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा.लि. दिल्ली	1993
डॉ. नगेन्द्र	–	भारतीय साहित्य कोश	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 110002	
डॉ. बाहरी हरदेव	–	राजपाल हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली	1997
डॉ. वर्मा धीरेन्द्र	–	हिन्दी साहित्य कोश(भाग एक)	ज्ञानमण्डल लि. काशी	
महाजन यशपाल	–	वृहत् हिन्दी ग्रन्थ सूची	भारतीय ग्रन्थ दिल्ली	
शास्त्री पं. हरगोविन्द	–	अमरकोश	चौखम्बा पब्लिशर्स नई दिल्ली	
साकरिया	–	राजस्थानी हिन्दी शब्द कोश	साकरिया पंचशील प्रकाशन, जयपुर	

वेबसाइट :– www.wikipedia.org/wrki/Psychoanalysis

मीना कुमावत
15/4/13

Signature of the Candidate with date

Outlines Opproved

15/4/13

Name and Signature of supervisor withe date and seal